Digitized by eGangotri

No.________
JAMMOO

विद्याचक्र ॥

अवध देश के डैरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन् श्रीयुत बिद्याति बिच्न कालिन ब्रौनिङ्ग ऐम. ए. बहादुर की आज्ञानुसार

अवध देश की पाठशालाओं के लिये

दायरह इल्म से उल्था किया गया ॥

और

उक्त साहिब की आज्ञा से ॥

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के यंत्रालय में छापा गया ॥

सन् १८७० ई०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

6353
Digitized by eGangotri

Price Rs -/11/-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Vedachakra
Digitized by eGangotri

PRATAP SINGH MUSEUM
SRINAGAR
Gl. No. 3039
3306

१ पाठ

पदार्थ ॥

हम अपने चारों ओर दो प्रकार के पदार्थ देखते हैं, कुछ तो मनुष्य ने बनाये हैं; जैसे टोपी, कुरसी, पोथी ; और कुछ पदार्थ ऐसे हैं कि मनुष्य ने नहीं बनाये पर ईश्वर ने उत्पन्न किये हैं; जैसे घोड़ा, वृक्ष, पत्थर, इत्यादि ॥

---

२ पाठ

सजीव और निर्जीव पदार्थ ॥

घोड़ा और पक्षी सजीव हैं और जंतु, कहाते हैं; वृक्ष भी एक प्रकार के सजीव हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर जंतु नहीं कहाते, वृक्ष और जंतुमें यह भेद है कि जंतु चल फिर सक्ते हैं और वृक्ष नहीं चल फिर सक्ता, पत्थर टोपी इत्यादि निर्जीव पदार्थ हैं ॥

---

३ पाठ

सजीव और निर्जीव पदार्थ ॥

स्त्री, पुरुष, बालक, को तत्त्वज्ञ जीव कहते हैं, घोड़ा पक्षी इत्यादि जीव मात्र हैं, परंतु तत्त्वज्ञ नहीं हैं; पत्थर, टोपी, इत्यादि जीव नहीं हैं किंतु निर्जीव वस्तु हैं ॥

---

४ पाठ

शरीर ॥

मनुष्यके शरीर होता है और शिर धड़ हाथ पैर शरीर के मुख्य अंग कहलाते हैं, शिर के अवयव खोपड़ी और चहरा है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चहरा शिरके सन्मुख का भाग है चंदिया शिरके ऊपरी भाग को कहते हैं ॥

---

५ पाठ

चहरा ॥

कपाल, आंख, कान, नाक, गाल, होठ, ठोड़ी, चहरे के अवयव हैं; दांत जीभ तालु मुख में हैं; आंख पलकों से ढक सक्ती है, कान शिर के अगल बगल हैं ॥

---

६ पाठ

धड़ ॥

शरीर का सबसे बड़ा अवयव धड़ कहाता है, छाती धड़के ऊपरका भाग है, छाती में छाती की हड्डी सामने होती है, पसलियां धड़ के दोनों ओर में हैं, पीठ की हड्डी को रीड़ कहते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

७ पाठ

ऊपर के अंग अर्थात् भुजा ॥

मनुष्य के दो कंधे, दो बांह, दो कर, और दश हस्तांगुली होती हैं, हर एककर में चार अंगुली और एक अंगूठा है; मनुष्य अपने दाऐं और बाऐं हाथ को पहचान सक्ता है ॥

---

८ पाठ ॥

नीचे के अंग अर्थात् पांव ॥

जांघ, पिंड़ली, चरण, और पादांगुली, नीचे के अवयव हैं; पिंडली में घुटना, नली, फीली, गट्टा हैं, तलुवा पादपृष्ठ और पादांगुली चरण के अवयव हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

९ पाठ

जोड़ ॥

शरीर के अंग जोड़ों पर हिलते हैं; हस्त और चरण की अंगुलियों में बहुत से जोड़ हैं, रीढ़ बहुतसी हड्डी और जोड़ों से बनी है, और इसीलिये रीड़ मुड़ सकी है, शिर रीड़ के ऊपरी भाग पर फिरता है ॥

---

१० पाठ

हड्डी और पट्ठे ॥

शरीर के कठोर भाग को हड्डी कहते हैं, जैसे, खोपड़ी, जावड़े की हड्डी, और छाती की हड्डी, रीड़, पसली, भुजा, और पांवकी हड्डी, इत्यादि । पट्ठे मांस विशेष हैं ॥

---

११ पाठ

हृदय और फेफड़ा ॥

हृदय से रुधिर सारे शरीरमें जाता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और हृदयमें लौट आकर फिर सारे शरीर के सब अवयवों में फिरता है; नाड़ी और शिरा ये दो प्रकार के नल हैं इनहीं में रुधिर फिरता है, हम फेफड़ों के द्वारा सांस लेते हैं॥

---

१२ पाठ

खाना और सुस्ताना॥

मनुष्य को जब भूख लगती है तब खाना खाता है, और जब प्यास लगती है पानी पीता है, जब थक जाता है सुस्ताता है, जब निद्रा आती है सोरहता है, जब मनुष्य प्रातःकाल सोकर उठता है तब फुर्ती जान पड़ती है; खाना पीना सोना प्रति दिन का काम है॥

---

१३ पाठ

चहरे के अवयवों के काम॥

आंख देखने के लिये, कान सुन्ने के लिये,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाक सूंघने के लिये, जिह्वा स्वाद के लिये है; मुसकुराना, हंसना, जंभाई लेना, खांसना, छींकना, बोलना, गाना, चिल्लाना, आदि ये सब चहरे के अवयवों से प्रगट होते हैं ॥

---

१४ पाठ

हाथ पांव के काम ॥

हाथ से अनेक काम होसक्ते हैं; छूना, पकड़ना, खींचना, लेना, लेजाना, देना; इनको छोड़ हाथ से और भी बहुत से काम होसक्ते हैं; पैरों से भी अनेक काम होते हैं, चलना, दौड़ना, कूदना, नांचना ॥

---

१५ पाठ

जीवन अवस्था ॥

जीव पहली अवस्था में बालक कहाता है, खेल कूद बात चीत विद्याध्ययन यही इस अवस्था के व्यापार हैं, बालक पन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पीछे तरुण अवस्था होती है, और इसके अनन्तर प्रौढ़ अवस्था होती है, इस पीछे दृद्धावस्था आती है और बल घटने लगता है ॥

१६ पाठ

जीव ॥

चौपाए वे कहाते हैं, जिन के चार पैर होते हैं, और उनके शरीर पर रूआं या बाल होते हैं, पक्षी उन जीवों को कहते हैं जिनका आच्छादन पंख हैं; और ये उड़ सक्ते हैं। मछलियां समुद्र और नदियों में तैरती हैं कीड़े वायु जल और थल में रहते हैं ॥

१७ पाठ

पालतू जीव ॥

कोई २ जीवों को मनुष्य पालते हैं इसलिये कि उनको कुछ लाभ होता है, देखो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

घोड़ा सवारी लेजाने में कैसा काम आता है, गाय दूध देती है भेड़ की ऊनसे कपड़ा बनता है, कुत्ता रक्षा करता है; बिल्ली चूहे पकड़ लेती है ॥

१८ पाठ

जंगली जीव॥

कोई जंगली जीव और जीवों को मार कर खाते हैं, जैसे सिंह, भेड़िया; सिंह बलवान होता है; बाघ निर्दयी होता है; भेड़िया बहुत खाऊ होता है; लोमड़ी छली होती है; नौले का शरीर पतला है और उसे रुधिर प्रिय है ॥

१९ पाठ

जंगली जीव ॥

जंगली जीव जंगल, पहाड़ों, और बियाबानों में रहतेहैं; जेब्रा की धारिआं कैसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सुन्दर होती हैं, हाथी का कैसा बलवान् शरीर है, चिकारा बहुत दौड़ता है शुतर पलंग, पतला दुबला और ऊंचा होता है और उसकी गर्दन लम्बी होती है॥

---

२० पाठ

जंगली जीव॥

खरगोश डर पोक होता है, देखो गिलहरी कैसी वृक्षों पर चढ़जाती है, चूहे और घूंस बिलों में छुप जाते हैं, बन्दर कैसे तमाशे करते हैं, कोई जंगली जीव, मांस भक्षी हैं कोई फल और वृक्ष की जड़ और कोई पत्ते और कोई अन्नभी खाते हैं॥

---

२१ पाठ

जीवों के आच्छादन॥

जीवों के आच्छादन भांति२ के होते हैं, भेड़ के ऊपर ऊन है शूकर के कड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

होते हैं, और घोड़े गाय की खाल पर रूएँ होते हैं, गिलहरी और चूहे पर सम्मूर होती है ॥

---

२२ पाठ

जीवों की बनावट ॥

बिल्ली, घूंस, और बाघ के मूछैं होती हैं, ऊंटके कुब्ब होती है, सूकरके थूतड़ी होती है बहुत से जीवों के सींग होतेहैं हाथी के पैर कैसे मोटे होते हैं और सूंड़ भी कैसी होती है, बहुत जीवों के पंजे होते हैं ॥

---

२३ पाठ

जीवों के शब्द अर्थात् अनुकरण ॥

बहुधा जीव बहुत चिल्लाते हैं, प्रत्येक जीवके शब्द का अलग २ नामहैं, जैसे सिंह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का दहाड़ना, कुत्तेका भोंकना, शूकर का घुर्राना, इसी भांति कहा करते हैं कि बिल्ली मिमियाती है, गधा रैंकता है, गाय रंभाती है, घोड़ा हिनहिनाता है, बन्दर किकियाता है, बैलडकराता है इत्यादि ॥

---

२४ पाठ

जीवों की क्रिया ॥

घोड़े की चाल कई प्रकारकी होतीहै, क़दम चलना, दुलकी जाना, पोइया जाना, सरपट दौड़ना, कुत्ते का दौड़ना और शिकार करना देखाहै, बन्दर कैसा उछलता है, गिलहरी एक डालीसे दूसरी डाली पर कैसी कूदजाती है, बाघ अपनी आखेटपर बड़ी झपट करता है, मूसे धरती में बिल खोद कर रहते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२५ पाठ

॥ जीवों के निवास स्थान ॥

कोई जीव तो धरती में बिल खोदकर रहते हैं, जैसे चूहा मुसा, और कोई जंगल में रहते हैं जैसे जंगली सूकर, और कोई रमनेमें पाले जाते हैं, जैसे हिरण, और कोई वृक्षों पर रहते हैं, जैसे गिलहरी, बन्दर ॥

---

२६ पाठ

जीवों के आहार ॥

कोई जीवों के दांत बड़े और मोटे होते हैं वे जीव साग पात खाते हैं, और किसीके दांत तीक्ष्ण और काटने के योग्य होते हैं, वे दूसरे जीवों की आखेट करते हैं, और कोईजीव कीड़े खाते हैं, कोई कृमि और कोई फल ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२७ पाठ

जीवें का कार्य्य में आना ॥

बहुधा जीवेंके अवयव बहुत उपकारी होते हैं, जैसे कि उत्तरीय आमेरिका में ऊदबिलाव होता है कि उसके सम्बूरकी टोपियां बनतीहैं, किसी २ जीवकी खाल से अघोड़ी और नरी बनती है, सूकरके बालों की कूंचियां बनती हैं ॥

---

२८ पाठ

जीवें का काम में आना ॥

घोड़े के बालों को ऐंठ कर कुर्सियें और गद्दों में भरते हैं, सींग की कंघी और बटन बनते हैं, हाथी दांत से छुरी के दस्ते बनाये जाते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

२९ पाठ

जीवों का काम में आना ॥

जीवों की चरबी की बत्तियां बनती हैं, सींग और खुर की छीलन से सरेस बनता है, बहुधा जीवों के संबूर की टोपियां बनती हैं, संबूर के चर्म बस्त्र और गलबन्धन भी बनाते हैं ॥

---

३० पाठ

पच्ची ॥

पच्ची के केवल दो पांव होते हैं, कोई २ पच्ची का शब्द बहुत मधुर होता है, जैसे बुल २, श्यामा; कोई २ पच्ची खाने के लिये पाले जाते हैं, जैसे कुक्कट, कुक्कटी, हंस, इत्यादि ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३१ पाठ

पक्षियों के काम ॥

किसी २ पक्षी के पैर लंबे होते हैं, ऐसे पक्षी झीलों में फिर कर मछली आदि खाते हैं, बाजों के पंजे मिले हुए होते हैं, जैसे बतके पंजे खाल से मिले हुए हैं, इस जाति के पक्षी अच्छा तैरते हैं, शुतरमुर्ग पक्षियों में सब से बड़ा है और बहुत शीघ्र दौड़-ता है ॥

---

३२ पाठ

पक्षियों के रङ्ग ॥

कोई २ पक्षियों का रङ्ग प्रिय होता है, और किसी का रंग साधारण होता है, देखो मोर और तोते के पर कैसे चमकदार और स्वरूपवान होते हैं, पक्षियों के पुराने पर प्रति वर्ष गिरपड़ते हैं, और नये पर निकल आते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३३ पाठ

पक्षियों का खाना ॥

कोई पक्षी अन्न खाते हैं, कोई कीड़े, कोई छोटे २ जीवों को मार कर खाते हैं, कोई फल खाते हैं, कोई सांप मैंढक मछलियां खाते हैं, उल्लू रातको उड़ता है, और रात ही को खाता है ॥

---

३४ पाठ

पक्षियों के घोंसले ॥

पक्षी अपने अंडे बच्चों के लिये घोंसले बनाते हैं, कोई २ घोंसले तो अत्युत्तमही बनते हैं, कोई २ पक्षी अपने घोसलों में अस्तर कर देते हैं, पहाड़ी बाज अपना घोंसला चट्टानों पर बनाता है, काक का घोंसला कैसे ऊंचे वृक्षों पर होता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३५ पाठ

पच्छियों का काम में आना ॥

कई पच्छियों के पंख प्रधानों के बिछौने और तकियों में भरे जाते हैं, जैसे बत, हंस और राज हंस के पर अंग्रेजी क़लम हंसही के बड़े २ परों की होती हैं, बहुत से पच्छियों का मांस सुस्वादु और उपकारी होता है॥

---

३६ पाठ

मछलियां ॥

मछली समुद्र नदी झीलों में अधिकाई में रहती हैं मछलियों के पूंछ और पर होते हैं, और उनकी हड्डियां नरम और स्वेत होती हैं, बहुत प्रकार की मछलियां मनुष्य के खाने में आती हैं, जैसे रोहू, बहुधा मछलियों पर छिलके होते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३७ पाठ

कीड़े मकोड़े ॥

कीड़े मकोड़ों के छः पर होते हैं और जो कीड़े मकोड़े अधिकाई से होते हैं, ये हैं मक्खी, गुबरैला, तीतरी, चैंटी, घ-हद की मक्खी और इनकीड़ों के बहुत से भेद होते हैं और इन्हें छोड़ और भी ब-हुत भेद के कीड़े होते हैं, लड़कों को याद रखना उचित है कि मधु मक्खी और बर्र डंकदार कीड़े हैं ॥

---

३८ पाठ

कीड़ो के रूपांतर ॥

कीड़ा पहिले छोटे से अंडे में होता है फिर बदल कर कमला हो जाता है और रेंगने लगता है और खाता है और बढ़ता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रहता है और फिर बदल कर बादामी हो जाता है और इस दशामें हलचल नहीं सका; इसके पीछे परदार कीड़ा होजाता है, और वायु में उड़ता है ॥

---

३९ पाठ

कृमि ॥

कृमि उन कीडों को कहते हैं जिनके हड्डियां नहीं होतीं इन कीड़ों के शरीर बड़े नरम होते हैं और इनका रुधिर स्वेत होता है, घोंगे सीप के भीतर होते हैं, जोंक भी कृमि में से है और बहुधा झीलों में होती है, जोंक रुधिर निकालने के लिये लाभकारी है ॥

---

४० पाठ

पौदे ॥

जो पौदे दृढ़ और ऊंचे होते हैं, उनको

6353

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वृक्ष कहते हैं और जो पौदे दृढ़ होते हैं और छोटे रहते हैं उनको झाड़ियां कहते हैं, फूल भी बहुत प्रकार के होते हैं, कई भांति की घास खेतों में उगती हैं, वन के वृक्षों पर काई जम जाती है ॥

---

४१ पाठ

जंगली वृक्ष ॥

जंगली वृक्षों की लकड़ी बहुत से कामों में लगती है, साल के कड़ी तख्ते और किवाड़, चौखट बनते हैं, तुन के संदूक, कुर्सियां, मेज़, बनती हैं, कोई वृक्ष फलदार होते हैं, जैसे सेब, नाशपाती, अमरूद, इत्यादि ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४२ पाठ

औषद के पौदे ॥

बहुत से पौदे औषधि में काम आते हैं, जैसे चिरायता, रेवन्द्चीनी की जड़, बाबूने के फूल, सनाय की पत्ती और छाल और अफीम इन से अधिक बहुत से पौदे हैं, जो औषधियों में काम आते हैं लड़के उन सबका नाम याद नहीं रख सक्ते ॥

---

४३ पाठ

पौदों का काम में आना ॥

नील जिसका शुद्ध नील रंग होता है, पौदों में से उत्पन्न होता है इसके सिवाय गन्ना, साबूदाना, क़हवा, चाय, वृक्षों से उत्पन्न होते हैं जिन वृक्षों का फल गूदेदार होता है, जैसे नारियल, बादाम, आदि उनसे तेल निकलता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४४ पाठ

पौदों का बढ़ना ॥

पौदे पृथ्वी की सजलता से पोषण होते हैं और बढ़ते हैं, उनमें फूल और बीज पैदा होते हैं और बीजों से नवीन पौदे उत्पन्न होते हैं, बीज फली और फलों में होते हैं ॥

---

४५ पाठ

पृथ्वी ॥

पृथ्वी एक बड़ा गोल पहाड़ और घाटी है, उसकी पृष्ठ पर जल और थल है, थल में बड़े २ भाग हैं, उनमें मैदान है जलमें महासागर सागर नदी झीलें हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४६ पाठ

पृथ्वी के देश ॥

पृथ्वी पर बहुत से देश और राज्य हैं, देश में जंगल नदी, पहाड़, खेत, बाग, खाई सड़कें बीयाबान होते हैं, देश के रहने वाले नगर नगरी गांव आदि में रहते हैं ॥

---

४७ पाठ

आकरीय द्रव्य ॥

पत्थर का कोयला चूना चिकनी मट्टी खड़िया नौन, और धातु पृथ्वी से निकाली जाती हैं, ये सब वस्तु आकरीय द्रव्य में से हैं, सब आकरीय पदार्थ लाभ कारी हैं, जैसे पत्थर का कोयला जलाने के लिये उत्तम है, चूने का गारा बनता है जो पक्के मकानों के बनाने में काम आता है, चिकनी मट्टी से ईटें और घड़ा आदि बनते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

४८ पाठ

धातु ॥

सब धातुओं में लोहा अधिकाई से मिलता है और लाभकारी होता है, सीसा, तांबा, रांग, जस्त, लोहा, बहुत मिलता है, पीतल यौगिक धातु है जो सीसा और तांबे से बनती है सोना और चांदी का बड़ामोल होता है, और इनका सिक्का बनता है ॥

---

४९ पाठ

रत्न ॥

जो पत्थर अधिक मौल्य हैं उनको रत्न कहते हैं, हीरा, नीलमणि, माणिक, पुखराज, पन्ना, जितने आकरीय द्रव्य अब तक मनुष्य को मालूम हुए हैं उन सबमें हीरा कठोर है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

५० पाठ

भिन्न वस्तु ॥

सब पदार्थ जीव बनस्पति और आकरीय द्रव्य से होते हैं, और सब आवश्यक वस्तु और भूषण पदार्थ और सब प्रकार के यंत्र और सब भांति के वस्त्र जो पहरने के लिये बनते हैं वे इन्हीं तीन वस्तुओं से बनाये जाते हैं कोई वस्तु ऐसी हैं कि केवल जीव से प्राप्त होती हैं और कोई बनस्पति वा आकरीय द्रव्यों से और कोई सब से ॥

---

५१ पाठ

जीव पदार्थ ॥

जो पदार्थ जीवों से प्राप्त होते हैं, उनमें से मधु, मोम, हड्डी, संबूर, रूआं, सीपी, चमड़ा, तेल, हाथीदांत, चरबी, ऊन, मक्खन, घी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हमारे काम में बहुत आते हैं, और इन्हें छोड़ और भी बहुत से जीव पदार्थ ऐसेही उपकारी हैं ॥

---

५२ पाठ

बनस्पति पदार्थ ॥

बनस्पति से लकड़ी, छाल, पत्ती, फल, बीज, जड़ें, फूल, गिरी, टहनियां, गोंद, रंग, अतर आदि प्राप्त होतेहैं और ये सबपदार्थ भिन्न २ कार्य्यों के लिये उपकारीहैं औरखाने पहरने और औषधि में भी काम आते हैं ॥

---

५३ पाठ

आकरीय पदार्थ ॥

आकरीय पदार्थों में से कई प्रकार की मट्टी भी होती है कई प्रकार की मट्टी से ईंटें बनती हैं, और किसीसे मट्टीके बासन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और किसी से चीनी के बासन, कंकड़ से चूना बनता है, पत्थर घर में लगता है, चकमक पत्थर से काच बनता है, कच्ची धातुओं को गला कर धातु निकालते हैं ॥

---

५४ पाठ

पृथ्वी ॥

पृथ्वी देखने में बिछौने की भाँति बिछी ऊई दृष्टपड़ती है, परंतु यथार्थ में वह एक बड़ा गोल है दिन में उसपर सूर्य्य प्रकाश करता है, और रात्रि में चन्द्र और तारा गण पृथ्वी; के वडे २ भाग बड़े समुद्रों से जुदे होगये हैं ॥

---

५५ पाठ

सूर्य्य ॥

सूर्य्य पृथ्वीकी परिक्रमा नहीं करता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जैसे प्रत्यक्ष में दृष्टि पड़ता बरन पृथ्वीसूर्य्य के चारों ओर बर्ष भरमें एक भचक्रकरती है, सूर्य्य पृथ्वी से बहुत दूर है और वह ठहराहुआहै और पृथ्वी से बहुत बड़ाहै ॥

---

५६ पाठ

दिन और रात ॥

क्योंकि पृथ्वी प्रति दिवस अपनी धुरीपर भ्रमण करती है इसलिये पृथ्वीका वहगोलार्ध जो सूर्य्य के सन्मुख है, प्रकाशित रहता है और अन्य गोलार्ध में अंधेरा रहता है, और इसी प्रकार और अप्रकाश को दिन रात कहते हैं, परि बर्त्तन प्रति चौबीस घंटों में होता रहता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

५७ पाठ

चन्द्रमा ॥

चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर फिरता है, और वर्ष की बहुतसी रातों में प्रकाशित रहता है, और अनुमान २९ दिन में एक बार पृथ्वी के चारों ओर फिर जाता है इतने काल को चन्द्रमास कहते हैं ॥

---

५८ पाठ

वायु मण्डल ॥

पृथ्वी के ओर पास वायु मण्डल है, पवन से हम स्वास लेते हैं, शीघ्र गामनी वायु को झक्कड़ कहते हैं, कुहर और वाष्प जो पृथ्वी से उठते हैं बादल हैं, जब वाष्प बादल होकर ऊपर चढ़ते हैं, और वहां सर्दी पाकर पानी होजाते हैं, तब मेंह बरसता है जिससे पृथ्वी सजला होती है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

५९ पाठ

दिन खण्ड ॥

यह पहिले वर्णन हो चुका है कि जब पृथ्वी पर प्रकाश होता है तब दिन कहते हैं, और जब अंधेरा होता है तब रात होती है, अब यह भी याद रक्खो कि दिन और रात्रि के प्रसिद्ध भाग ये हैं; प्रातःकाल अर्थात् पहरदिन चढ़े तक दो पहर, सायंकाल, आधीरात, दिन और रात में २४ घंटे होते हैं ॥

---

६० पाठ ॥

सप्ताह और दिन ॥

सप्ताह के सात दिवस ये हैं, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार; एकमासमें चार सप्ताह होते हैं, और वर्षमें ५२ सप्ताह आते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६१ पाठ

मास ॥

वर्षमें बारह मास अर्थात् महीने होते हैं जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रेल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर; प्रति वर्ष में चार ऋतु होती हैं बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शीत ॥

---

६२ पाठ

ऋतु ॥

बसन्त उस ऋतु को कहते हैं जिस में बनस्पति उगतेहैं, फल और बीज जबपक जाते हैं; और सर्दी गर्मी और वर्षा की ऋतु तुम जानतेहो हो ॥

---

६३ पाठ

मुख्य दिशा ॥

पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारदिशा हैं,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जिस ओर से सूर्य निकलता है वह पूर्व और जिस ओर अस्त होता है पश्चिम है और पूर्व की ओर दहिना हाथ कर खड़े होवें तो जिधर मुख है उधर उत्तर और पीठ की ओर दक्षिण होगा ॥

---

६४ पाठ

देश प्रकृति ॥

पृथ्वी के सब प्रदेशों में गर्मी सर्दी तुल्य नहीं होती परंतु कोई भाग बहुत उष्ण कोई सम और कोई बहुत ठंढे हैं; सम भाग सब भागों से उत्तम हैं, जिन भागोंमें सर्दी गर्मी अधिक होती है, उन भागों के बीच के प्रदेशों में वायु जलका स्वभाव बहुत पलटा करता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६५ पाठ

देशों की उपज ॥

कोई पौदे केवल उष्ण देश में उग सक्ते हैं जैसे मसालेके वृक्ष और कोई केवल सम प्रदेशों में जैसे गेहूं; सम प्रदेशों के पौदे न तो बहुत गर्मी के देशों में उगसक्ते हैं और न अधिक सर्दी के देशों में, परन्तु गर्मी और सर्दी से बचाने में श्रम किया जाय तो अवश्य रह सक्ते हैं ॥

---

६६ पाठ

पृथ्वी के भाग ॥

थल के चार बड़े भाग हैं, यूरप एशिया एफ्रिका एमेरिका, प्रत्येक खण्ड में बहुत सी जातें रहतीहैं, जलके पाँच बड़े भाग हैं, पूर्व समुद्र, पश्चिम समुद्र, उत्तर हिम समुद्र, दक्षिण समुद्र, और हिंदुस्थान का महासागर ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६१ पाठ

कुटुम्ब ॥

माता, पिता, भाई, बहिन, एक कुटुम्ब कहलाता है और माता पिता के लड़केलड़कियों का भाई बहिन; बहुत से कुटम्ब मिलकर एक जाति बनती है ॥

---

६८ पाठ

रोग ॥

कभी मनुष्य की प्रकृति यथार्थ नहींहोती है, शरीर रोग के कारण निर्बल होजाता है, जो रोग अच्छा न होसकै तौ मनुष्य मरजाता है और शरीर इन्द्रियां रहित होकर थोड़े दिनों में बुरा होजाता है और बिखर जाता है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

६९ पाठ

मौत ॥

मरने के पीछे इन्द्रियां काम नहीं करतीं जीते जी चेतन शक्ति शरीर में रहती है, शरीर और चेतन शक्ति मिलकर एक पिंड है, मरने के समय चेतन शक्ति शरीर से निकल जाती है किन्तु मरती नहीं अर्थात् शरीर मर जाता है चेतन शक्ति कभी नहीं मरती ॥

---

७० पाठ

परब्रह्म के गुणानुवाद ॥

परब्रह्म ने जैसे मनुष्य बनाया है और उसको चेतन शक्ति और शरीर दिया है इसी भांति सब पदार्थ उत्पन्न किये हैं वे सदैव से हैं और सदैव रहेंगे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

७१ पाठ

परब्रह्म के गुणानुवाद ॥

सब वस्तु बदलती हैं परंतु परब्रह्म अविकार है, वह कुछ कर सक्ता है और प्रत्येक स्थान और प्रति समय में स्थित है परंतु दृष्टिगोचर नहीं है; परब्रह्म सब कुछ जानता है और हमारा धर्म है कि उसके बड़प्पन की प्रतिष्ठा और आदर करैं ॥

---

७२ पाठ

मनुष्य के धर्म ॥

परब्रह्म की आज्ञाओं को जानना और उसकी आज्ञाओं के आधीन रहना हमारा धर्म है और आवश्यक है; जिस कार्य्य को ईश्वर ने निषेध किया है वह हमको करना उचित नहीं है परब्रह्म का प्रेम तन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मन से करना हमारा धर्म है, और सब मनुष्यों से प्रेम करना भी उचित है ॥

इति ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE